“नेपाली (गोरखा) समाज का लोक संस्कृति कापर्व - दसैँ (विजयादशमी)”

डॉ० छबिलाल न्यौपाने
सहायक-प्राचार्य (दर्शन)
नागार्जुन उमेश संस्कृत महाविद्यालय
दरभंगा, बिहार
Email : chhabilalneupane@hotmail.com

प्रस्तावना

भारतवर्ष में गोरखा शब्द से नेपाली भाषी समुदाय के लोगों को जाना जाता है। नेपाली भाषा नेपाल, भारत (सिक्किम, आसाम, दार्जिलिंग, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश), भूटान, तिब्बत, म्यांमार में रह रहे गोरखा समुदाय के लोगों की मातृभाषा है।नेपाली भाषी लोगों को यह नाम८वीं शताब्दी के हिन्दू योद्धा संत श्रीगुरु गोरखनाथ सेप्राप्त हुआ था। भारतीय संस्कृति से अनुप्राणित सनातन धर्म की मूल-परम्पराओं को जीवित रखने में भारतवर्ष के विभिन्न देशों की अहम भूमिका है। यही कारण है कि भारतवर्ष के भारत, नेपाल, भूटान आदि विभिन्न देशराजनैतिक, भौगोलिक दृष्टिकोण से अलग-अलग होने पर भी सांस्कृतिक, धार्मिक परम्पराओं से एक हैं। भारतवर्ष के देश भौगोलिक रूपी शरीर से अलग अलग होने पर भी इन सभी शरीर में विद्यमान आत्मा एक है। अतः राजनैतिक रूप से सुदृढ करने के लिए परस्पर में मित्रराष्ट्र का व्यवहार किया जाता है। भारतवर्ष के विषय में यह श्लोक उद्धृत किया जाता है -

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र संततिः॥[1]

अर्थात् समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में जो देश है उसे भारत कहते हैं तथा उसकी संतानों (नागरिकों) को भारती कहते हैं।

लोक-संस्कृति परिभाषा -

१. लोक का स्वरूप - लोकृ दर्शने धातु से **घञ् प्रत्यय** से लोक शब्द निष्पन्न होता है। जिसका अर्थ है - देखना। लोक शब्द के लिए वेदों में जन, गाम्य जैसे शब्द प्रयोग हुए हैं।

---

[1]विष्णुपुराण २.३.१

©Indira Gandhi National Open University

२. संस्कृति का स्वरूप -संस्कृति शब्द की निष्पत्ति **सम् उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से ति प्रत्यय** लगकर हुई है। संस्कृति शब्द से अपने सन्तानों के लिए सुमार्ग की ओर उन्मुख करने के उद्देश्य से पूर्वजों के द्वारा प्रतिपादित विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों का बोध होता है। मानव समुदाय किसी न किसी संस्कृति में आबद्ध होता है। जाति व सम्प्रदाय की विविधता से संसार में संस्कृतिगत विविधता प्राप्त होती है। सांस्कृतिक विविधता का कारण प्रत्येक जाति के चाल-चलन, रीति-रिवाज, रहन-सहन, आचार-विचार, भावना आदि में भिन्नता को देखा जाता है। प्रत्येक जातीय संस्कृति के योग से राष्ट्रिय संस्कृति का निर्माण होता है अतः जातीय संस्कृति राष्ट्रिय संस्कृति का अभिन्न अङ्ग होता है।

लोकसंस्कृति का स्वरूप-

लोक का अर्थ जनसामान्य से है, जो विस्तृत रूप से इस पृथ्वी पर फैले हुए हैं। सामान्य अर्थ में शिक्षित समुदाय से भिन्न मानव समुदाय को लोक की संज्ञा दी जाती है। संस्कृति शब्द से तात्पर्य धर्म, दर्शन, साहित्य और कला इत्यादि से लगा सकते हैं। जीवन जीने की कला से इसका सम्बन्ध होता है।

मनुष्य की बाह्य प्रवृत्ति से जो विकसित होता है उसे समग्र रूप से सभ्यता कहा जाता है, जबकि सभ्यता की आंतरिक प्रवृत्ति से जो निर्मित और निर्मित होता है उसे संस्कृति कहा जाता है।

जनता की मंशा आम जनता से है। सरल भाषा में लोक का तात्पर्य विश्व, पृथ्वी और विश्व में मानव जाति से है। ब्रह्मांड में लोगों की व्यक्तिगत पहचान के बावजूद, उनकी सामूहिक पहचान इस दुनिया में मौजूद है।

विश्व में रहने वाले वंचित, उत्पीड़ित, पीड़ित, दलित, जंगली जातियाँ, जनजातियाँ जैसे कोल, भील, गोंड, संथाल, नागा, किरांत, हूण, शक, यवन, खस, ब्राह्मण, नेपाली या गोरखा आदि कहलाते हैं। इन विभिन्न जातियों आदि की विभिन्न संस्कृतियों से बनी एकरूपता को लोक संस्कृति कहा जाता है। अंग्रेजी में फोकलोर कहा जानेवाला लोकवार्ता की एक शाखा है -लोक संस्कृति।

दुनिया में लोगों के रहन-सहन, भाषा, धर्म, संस्कृति, रीति-रिवाज और परंपराएं अलग-अलग हैं। उनकी वेशभूषा, खान-पान, व्यवहार, नृत्य, गीत, कला-कौशल, भाषा आदि सभी अलग-अलग दर्शाए गए हैं। लेकिन लोक संस्कृति एक ऐसे सूत्र में बंधी है जिसमें हर चीज एक माला की तरह एक साथ बंधे हुए

©Indira Gandhi National Open University

रत्न की तरह दिखती है।इसीलिए लोक संस्कृति कभी भी सभ्य समाज की मोहताज नहीं होती। लेकिन शिष्ट समाज को लोक संस्कृति से प्रेरणा मिलती है। लोक संस्कृति मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम है। इसके द्वारा लोगों के मन की मांगलिक भावनाओं से परिपूर्ण होना उत्तम है।

लोक जीवन की तरह ही लोक गीतों, लोक कथाओं, लोक नाटकों आदि में सरल, सुंदर, प्राकृतिक भावों का चित्रण किया जाता है। ये अन्यत्र मिलना काफी दुर्लभ हैं। इसलिए लोक साहित्य में लोक का मन बोलता है, जीवन की छाया झलकती है। मूलतः कहा जा सकता है कि लोक संस्कृति किसी भी जाति की पहचान का मुख्य आधार होती है। प्रकृति स्वयं गाती है, गुनगुनाती है। लोक जीवन के हर पहलू में लोक संस्कृति का दर्शन छिपा हुआ है।यह लोक साहित्य मानव साहित्य जितना ही प्राचीन माना जाता है। यह माना जा सकता है कि इस संस्कृति का प्रारम्भ एवं उद्भव संसार की रचना के बाद तथा संसार में मानव की उत्पत्ति के साथ ही हुआ। अत: लोक संस्कृति में मानव जीवन के प्रत्येक चरण, प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक काल के साथ-साथ प्रकृति सभी का समावेश होता है।

लोक संस्कृति का वास्तविक अर्थ लोक व्यवहार से लगाया जाता है। लोक और संस्कृति एक-दूसरे को गहराई से प्रभावित करते हैं, लोक संस्कृति लोक की संपदा होती है।किसी भी समाज व जाति का परिचय उनके भाषा, संस्कृति तथा संस्कार से होता है। संस्कृति ब्रह्म की तरह अवर्णनीय है। यह व्यापक होता है। अनेक तत्त्वों का बोध करानेवाला है जो जीवन के विविध प्रवृत्ति के साथ सम्बन्धित होता है। अतः संस्कृति का विविध अर्थो व भावों में प्रयोग होता है।

संस्कृति मानव जीवन को परिष्कृत एवं समृद्ध करने का साधन है। किसी भी जाति का गौरव, सभ्यता और संस्कृति संस्कृति पर निर्भर होती है। संस्कृति विकसित होगी तो जाति भी विकसित होगी। यह भी सत्य है। संस्कृति को मानव समाज एवं राष्ट्र की आत्मा माना जाता है।इसमें कला, साहित्य, धर्म, दर्शन, इतिहास, भाषा, मानव जीवन के मूल्य, मान्यताएँ, परंपराएँ, रीति-रिवाज, व्यवहार, त्यौहार, धार्मिक मान्यताएँ, लोक जीवन आदि शामिल हैं।संस्कृति समाज के भीतर संपूर्ण विषय का प्रतिबिंब है। किसी भी राष्ट्र या जाति की कला-कौशल, बौद्धिक विकास और चिंतन आदि में प्रकट होने वाली समग्र गतिविधि के परिष्कृत रूप को संस्कृति कहा जा सकता है।वस्तुतः संस्कृति हमारी जातीय संपदा एवं समृद्धि की सूचक है।

©Indira Gandhi National Open University

नेपाली लोक संस्कृति

भारतवर्ष में नेपालीभाषी समाज की लोक-संस्कृति को जानने से पूर्व नेपालीभाषी समाज और लोक को जानना आवश्यक है। इस समाज के अधिकांश जनजातियों का अस्तित्व धर्म से केन्द्रित है। गौतमबुद्ध, राम-कृष्ण, 33 कोटि देवी-देवता, प्रकृति, वन, पहाड़, नदी, मन्दिर, गुम्पा ये ही इनकी आस्था के केन्द्र बिंदु हैं। जन्म-संस्कार से लेकर मृत्यु पर्यन्त संस्कारों में विविधता देखने को मिलती है। भारतवर्ष में नेपाली समुदाय के अन्तर्गत क्षेत्री(छेत्री), बाउन(ब्राह्मण), राई, लिम्बू, कामी, दमई, प्रधान, नेवार, गुरुङ्ग, सार्की, थापा, मगर, सन्यासी, माझी आदि आते हैं। इस समाज में जातीय विविधता के कारण संस्कार, संस्कृति, परम्परागत मान्यताओं में विविधता देखने को मिलती है। हालाँकि मूल आधार एक ही है लेकिन भारतवर्ष में अलग-अलग जगहों पर रहने वाले नेपालीभाषियों के त्योहार मनाने के तरीकों और धार्मिक परंपराओं में असमानता है।

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर भारतवर्ष में नेपाली जाति की सांस्कृतिक विशिष्टता है। चूँकि नेपाली जाति विभिन्न जाति समूहों से बनी है, इस प्रजाति की संस्कृति, भाषा और धार्मिक मान्यताएँ अलग-अलग हैं।नेपाली जातीय समूहों में बाहुन(ब्राह्मण), छेत्री(क्षत्रिय), राई, लिम्बु, मगर, नेवार, गुरुंग, कामी, दमाई, सारकी, सुनुवार, भुजेल, तमांग, शेरपा, भोटे, लापचे आदि शामिल हैं। नेपाली संस्कृति रीति-रिवाजों, तौर-तरीकों, जीवनशैली, वेशभूषा, त्योहारों, परंपराओं, रीति-रिवाजों, विश्वासों, आस्था, धर्म, साहित्य, कला आदि का सामान्य रूप है, जो प्राचीन काल से इन विभिन्न जाति समूहों द्वारा देखा जाता रहा है।

संस्कृति को संपूर्ण समाज के लिए जीवन जीने का एक तरीका माना जाता है। नेपाली लोगों की संस्कृति में शिष्टाचार, पोशाक, भाषा, अनुष्ठान, व्यवहार के नियम और मानदंडों के नियम शामिल हैं। इस जाति में संस्कृति, परंपरा या नवीनता का अनूठा संयोजन है। भारतवर्ष के नेपाली जाति सांस्कृतिक संगीत, वास्तुकला, धर्म और सांस्कृतिक समूहों में डूबा हुआ है। भारतवर्ष के नेपाली लोगों द्वारा पहनी जाने वाली वेशभूषा, दौरा-सुरुवाल, चौबंदी - चोली - गुनिउ, फरिया, चोलो की टोपी सभी लोक संस्कृति का हिस्सा हैं।नेपाली पुरुषों के दौरा में आठ तुना होते हैं, जो शरीर के चार हिस्सों में बंधे होते हैं। इस प्रकार दौरा से बंधे हुए गले को नेपाली मान्यता में भगवान शिव के गले में बंधे सांप का प्रतीक माना जाता है।

©Indira Gandhi National Open University

लोक संस्कृति के कारण ही किसी भी जाति और समाज की अपनी अलग पहचान, अस्तित्व और महत्व होता है। यह प्रतीक है, न केवल अस्तित्व का, बल्कि जातीय धन-संपदा का भी। इसमें रूढ़ियाँ, अंधविश्वास, धार्मिक मान्यताओं से लेकर विभिन्न अनुष्ठान, मान्यताएँ आदि शामिल हैं। लोक संस्कृति प्रकृति की गोद में विकसित होती है। यहां तक कि लोक संस्कृति की शिक्षा पद्धति का भी सम्मान किया जाता है। इसमें अविश्वास, तर्क आदि के लिए कोई स्थान नहीं है। अत: लोक संस्कृति में श्रद्धा का भाव परंपरागत रूप से शाश्वत है।लोक संस्कृति, लोकोत्तर संस्कृति और विश्व की सभी मानव संस्कृतियों के बीज एक ही हैं। यह बीज कोई अन्य संस्कृति नहीं बल्कि लोक संस्कृति है।

दरअसल, ऐसे कई विद्वान हैं जो कहते हैं कि लोक में जो कुछ है, वह सब लोक संस्कृति है। लेकिन लोक में जो कुछ भी घटित हुआ, उसे बंद आँखों से लोक संस्कृति नहीं माना जा सकता। कुछ विद्वानों ने तो लोक परंपरा और लोक संस्कृति को एक ही चीज़ माना है। लेकिन इन दोनों में बहुत बड़ा अंतर है। लोक परंपराओं से अच्छी और उत्कृष्ट चीजें विकसित होती हैं और समय के साथ लोक संस्कृति बन जाती हैं। परम्पराएँ बन रही हैं, नष्ट भी हो रही हैं। लेकिन लोक संस्कृति कभी नहीं बदलती, न ही इसे नष्ट किया जा सकता है।

नेपाली लोक संस्कृति में सर्वजाति समन्वय-

नेपाली जाति के मगर समुदाय में एक अलग तरह की लोक संस्कृति है। घटस्थापना के दिन, मगरजाति के पुजारी की पत्नी स्नान करती है और खुद को शुद्ध करती है और मार्सी चावल (चावल का प्रकार) का जाँड़ (मद्यपान विशेष) रखती है। यह फूलपातीमें महकने लगता है। यह जाँड़ (मद्यपान विशेष) मीठा न होता तो माँ दुर्गा नाराज होनेका अनुमान लगाया जाता है। अब कालरात्रि की आधी रात को मगर जाति के पुजारी केले के पत्ते पर जाँड (मद्यपान विशेष) का बंडल (पोको) बनाकर कालीदेवी को अर्पित करते हैं और ब्राह्मण पुरोहित संकल्प का उच्चारण करते हैं। नौ नौ दोनें (साल के पत्ते द्वारा बनाया जाने वाला बोहोतो) पर पूजा के लिए अंकुरित सप्तधान्य (अङ्कुरित सप्तधान्य, अंकुरित जौं, जयन्ती) रखा जाता है।पूजा के लिए दोने में स्थापित जयन्ती का प्रयोग टीका लगाते समय नहीं किया जाता। विजयादशमी के दिन लगाया जाने वाली टीका लगाते हुए लगाए जाने वाली जयन्ती घटस्थापना (नवरात्रि के प्रथम दिन) के दिन रखा जाता है। फूलपाति के दिन (नवरात्रि सप्तमी तिथि)पुराने खुंडा, खुकुरी को साफ करके,

©Indira Gandhi National Open University

संधा पहनाकर, लाल और सफेद झंडों से सजाकर देवी दुर्गा का स्थान में स्थापित किया जाता है। इसे दुर्गा को जगाना (जागरण करवाना), खाँडो (शक्ति) को जगाना कहते हैं। खाँडो का अर्थ है शक्ति। इसे खड्गसिद्धि के नाम से भी जाना जाता है।अष्टमी के दिन सुबह उगते सूरज की रोशनी में बलिपूजा की जाती है। बली पूजा नवरात्रि की मुख्य पूजा है। कोट (कालीदेवी स्थापित स्थान विशेष, बलि-पूजन स्थान) में ब्राह्मण- पुरोहित और कोट के मुख्य कर्ता होता है। बलि के लिए पशुविशेष को कोट में लाया जाता है। पशु को ले जाते समयनगाड़ा बजाया जाता है। नगाड़ा बजाते समय सर्वोत्तम राग कोबजाया जाता है। जिस विशेष राग को शाही काल में ठकुरी-जाति की विवाह के अलावा ब्राह्मणों के विवाह में नहीं बजाया जा सकता था। नगाड़ा में राग बजाने वाले को नगर्ची कहा जाता है। उस समय नेपालीमालश्री धुन बजाया जाता है। नेपाली जाति के सभी शुभ पर्वों में यह मालश्री धुन बजाने की प्रथा है। प्राचीन समय में विशेष रूप से सेना का मनोबल बढ़ाने के लिए इस धुन को बजाया जाता था। नेपाली गोरखा सेना के विजय-पताका को इस धुन में चिह्नित किया गया था।सेना का मुखिया भी ब्राह्मणहोता था लेकिन उनमें से अधिकांश आदिवासी थे। मालश्रीधुन के साथ बलि देने के लिए कोट में पहुंचने के बाद बलि दी जाती है।जो एक झटके में बलि देता था उसे पगड़ी पहनाया जाता था। इस कार्य में गोरखा सेना के जनजाति (आदिवासी) अग्रणी रहते थे।पहले से चले आए रीति-रिवाजों के अनुरूप आज भी विभिन्न कोट स्थानों में उन जनजाति के वंशजों द्वारा यह जिम्मेदारी आज तक निभायी जाती रही है। इनके अतिरिक्त अन्य कोई भी व्यक्ति अथवा समुदाय बलि मारने के लिए अधिकृत नहीं है।

दशैं (दशमी) के टीका के दिन घटस्थापना में रखे गए कलश के जल से अभिषेक करते हुए टीका लगाकर हर्षोल्लास पूर्वक पर्व को मनाना की परंपरा है। इस दिन, नेवारीजाति के लोग सफेद कपड़े पहनकर और हाथों में खुँडा (बलि में प्रयोग होने वाला अर्धचन्द्राकार खड्ग हथियार विशेष) लेकर नगर परिक्रमा करते हैं।गंडकी क्षेत्र में इसे सराप/सराय खेलना (विशेष त्योहार के दिनों में, मंदिर के अंदर लोगों को हाथों में खुकुरी, तलवार, खुँडा, खड्ग और छड़ी जैसे हथियारों के साथ बाजाके लय में नाचते, लड़ते हुए दिखाया जाता है।) कहा जाता है।गुरुंग, मगर, दमाई, कामी, बाहुन (ब्राह्मण) को इस तरह का सराप/सराय खेलने के लिए निषेध नहीं था।। यह खेल युद्ध के अभ्यास के तौर पर किया जाता था।विजयादशमी के दिन यद्धाभ्यास

©Indira Gandhi National Open University

प्रारम्भ करने पर आगे पीछे युद्धाभ्यास के लिए शुभ दिन, मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं होती थी।आज भी इस परम्परा को गोरखा सेना संजोये हुए है।इस प्रकार हर जाति के समन्वय से चलने वाला यह दशैँ पर्व (विजयादशमी पर्व)नेपालीजाति के प्रसिद्ध त्यौहारों में से एक है।

इस पर्व में ब्राह्मण, क्षत्रिय वर्ग घटस्थापना के दिन से ही दुर्गासप्तशती का पाठ प्रारम्भ कर अष्टमी/नवमी के दिन समापन करते हैं।

नवरात्रि प्रथम दिवस - घटस्थापना–नवरात्रि के प्रथम दिवस घटस्थापना का दिन होता है। सत्य सनातन वैदिक परम्परा में किसी भी धार्मिक कार्य का सम्पादन कलश स्थापना के बिना नहीं होता है। वैदिक काल से ही कलश स्थापना का महत्त्व है।कलश मन्दिर अथवा अनुष्ठानस्थल में ईशानकोण की तरफ स्थापित किया जाता है। इसको ईशानकलश भी कहा जाता है। कर्मसमाप्ति में इसके जल से शान्ति अभिषेक किया जाता है। इस कारण इसे शान्ति कलश भी कहा जाता है। इस कलश में वरुण देवता की पूजा की जाती है।

घटस्थापना में क्रमशः भूमिशोधन, सप्त धान्यस्थापन, कलशस्थापन, कलश में तीर्थादि जल, सर्वौषधि, पञ्चरत्न, फल, यव, गन्ध, दूर्वा, सप्तमृत्तिका, पञ्चपल्लव का प्रक्षेपणकिया जाता है। कलश को दो वस्त्रों से वेष्टन किया जाता है। आम आदि पञ्च पल्लवों के द्वारा कलश के मुख को ढका जाता है। इसके पश्चात् वरुण देवता का आवाहन किया जाता है। इस के पश्चात् सभी तीर्थों का आवाहन किया जाता है।

कलश स्थापना के लिए भूमि पर रेत मिश्रित मिट्टीमें सप्त धान्य को बोया जाता है। नवरात्र के प्रत्येक दिन इसकी पूजा अर्चना की जाती है। नवमी को दुर्गा विसर्जन के समय देवी को सप्त धान्य के अंकुरित पौधों को (जमरा) चढ़ाया जाता है। देवी को समर्पित करने के उपरान्त विजयादशमी के दिन अपने से बड़ों से आशीर्वाद के रूप में माथे में लाल अक्षत (टीका) तथा दायें कान में लगाया जाता है।

फूलपाती (नवरात्रि का सातवाँ दिन/सप्तमी तिथि)-

सप्तमी के इस विशेष दिन को फूलपाती कहा जाता है। इस दिन देवी दुर्गा के कालरात्रि स्वरूप की विशेष पूजा की जाती है।

©Indira Gandhi National Open University

कालरात्रि देवी का स्वरूप - कृष्णवर्ण का अर्थ है काला रंग, तीन आँखें और चार हाथ, चारों हाथों में तलवार और मसाले, घोर मुद्रा और अभय मुद्रा धारण की हुई हैं। साँस लेते समय आँग का निकालती हैं। कालरात्रि देवी ने रक्तबीज (जो रक्त की हर बूंद जमीन पर गिरने से पुनर्जीवन प्राप्त करने वाला था) नामक राक्षस को मार डाला था।

इस दिन केला, हल्दी,धान, अशोक, वेलपत्र, अनारफल(दाडिम), धान की बाली, केले का पौधा, जयन्ती और गन्ना तथा विभिन्न प्रकार के फूल पत्तों को मिलाकर 'फूलपाति'बनाया जाता है। इस दिन देवी कालरात्रि के साथ-साथ विद्या और संगीत की देवी मां सरस्वती की भी पूजा की जाती है।

जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि।

जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तुते॥[2]

झूले (लिङ्गेपिङ्) का निर्माण -आज से (सप्तमी तिथि से) गाँव में औपचारिक रूप सेचार बिना कटे हरे बांसों को गाड़करझूला का निर्माण किया जाता है। झूले को पिंग कहा जाता है। यह पिंग दसैँ का एक और आकर्षण है, जो सदियों से दसैँ के दौरान मनोरंजन के पारम्परिक साधन के रूप में लोकप्रिय रहा है।किसी व्यक्ति के चढ़ने-उतरने के बाद बांस के ऊपर से अलगआवाज आती है। दसैँ की इस विशेष अवधि के दौरान कम से कम एक बार जमीन छोड़ने की प्रथा है।

महाअष्टमी (शस्त्र-अस्त्र पूजन, भद्रकालीपूजन, बलिप्रथा) –

नवरात्रि का आठवाँ दिन।इस दिन मां दुर्गा के आठवें स्वरूप महागौरीकी विधि-विधान से पूजा की जाती है। गणेश जी के रूप में स्थापित कलश के बगल में नौ छोटे पत्थरों को नवदेवी की मूर्ति के रूप में स्थापित कर नैवेद्य, फल आदि चढ़ाकर पूजा की जाती है।आज आधी रात यानी नवमी की शुरुआत में देवी-देवताओं की पूजा का विशेष विधान है। गोरखा आर्मी रेजिमेंट में हथियारों और सामानों की भी विधि-विधान से पूजा की जाती है।

इस दिन भद्रकाली की भी विशेष पूजा की जाती है, सती देवी अपने पिता दक्ष प्रजापति द्वारा अपने पति महादेव की निंदा सुनने में असमर्थ हो जाती हैं और अग्नि में कूदकर आत्मदाह कर लेती हैं।उस समय भद्रकाली महादेव से महाकाली के रूप में प्रकट हुईं, जो यह जानकर क्रोधित हो गईं।

---

[2]अर्गलास्तोत्रम् २

©Indira Gandhi National Open University

इस दिन शक्ति के महास्वरूपा महागौरी और भद्रकाली स्वरूपों की पूजा-अर्चना करने के बाद उत्सव मनाने की प्रथा है। इस प्रकार, बकरा, मुर्गी, बत्तख आदि की बलि देने की प्रथा है, जबकि जो लोग शाकाहारी हैं और जो बलि नहीं देना चाहते हैं, वे चार अंगों जैसी छोटी छड़ियों के साथ कूष्माण्ड, तोरई आदि की जानवरों के रूप में उनकी बलि दी जाती है।

आजकल बलिप्रथा का व्यापक विरोध होने लगा है। पशु अधिकार संगठनों और अंतरराष्ट्रीय नागरिक समाज ने ऐसे कार्यों को निंदनीय बताया है। अहिंसा निश्चित रूप से एक अच्छी बात है, हालाँकि मांसाहारियों ने सभ्यता के साथ-साथ मांस खाने के लिए जानवरों का उपयोग करने की प्रथा को भी अपने तरीके से समझाया है।चाहे वह हिंदुओं का दसैँ हो या ईसाइयों के क्रिसमस और थैंक्सगिविंग के दौरान खाए जाने वाले टर्की पक्षी हों या मुसलमानों की ईद-बकर ईद के दौरान काटी जाने वाली बकरियां हों, हमने इस तथ्य का भी पालन किया है कि मानव सभ्यता कुछ धर्मों और अनुष्ठानों के माध्यम से मांसाहारी रीति-रिवाजों को लेकर आई है। अब पता चला है कि बलिदान देने में काफी कमी आ गयी है।विशेषकर दसैँपर्व के दौरान, मेहमानों को मांस खिलाने की प्रथा को सम्मान और प्रतिष्ठा के रूप में देखा जाता था। जिस घर में खसी मांस काटे जा रहे होते हैं, वहां सुबह से ही विशेष गतिविधि होती है, जिसमें पानी गर्म करना और पेड़ काटने वाले लोगों को बुलाना भी शामिल है। किसके घर खसी ? किस रंग का है? आदि बच्चों में विशेष रूप से जिज्ञासा एवं उत्सुकता आदि बनी रहती है।

पहले बाजार में मांस खरीदने का रिवाज न होने तथा बाजार में मांस की आसानी से उपलब्धता न होने के कारण तथा कृषक समाज होने के कारण घर में ही बकरियों के आसानी से उपलब्ध हो जाने के कारण बलि बहुत होती थी।लेकिन आजकल बाजार में आसानी से उपलब्ध मांस और मांस खाने की घटती चाहत भी एक कारण हो सकता है कि घरों में बलि देने का चलन कम हो रहा है।

दूसरी ओर, इस तथ्य के कारण कि कई नेपाली घरों में मांस को रखने के लिए रेफ्रिजरेटर नहीं हैं, जिससेमांस स्वस्थ नहीं रह सकते हैं, और कई दिनों तक पकाने के बाद पके हुए मांस खाने की आदत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।मांस का सेवन करते समय इस बात का ध्यान रखना जरूरी है।

©Indira Gandhi National Open University

संस्कृत में बली का अर्थ है किसी भी चीज़ का त्याग करना, इस दिन हम एक अच्छा इंसान बनने के लिए अपने क्रोध, वासना, ईर्ष्या और अहंकार का भी त्याग कर सकते हैं।

महानवमी (सिद्धिदात्रीपूजा, बलिप्रदान, कन्यापूजन,दसैँ की पूर्व तैयारी) -

नवरात्रि का नौवां दिन में दुर्गा माता की नौवीं शक्ति रूप माता सिद्धिदात्री की विशेष पूजा होती है। इनके साथ ही आज धन की देवी मां महालक्ष्मी देवी की भी पूजा की जाती है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन शक्ति के रूप में सिद्धिदात्री की पूजा करने से व्यक्ति पूरी दुनिया पर विजय प्राप्त करने में पूर्णता प्राप्त कर सकता है और दुनिया में कुछ भी अप्राप्य नहीं है।जैसा कि देवी पुराण में बताया गया है, स्वयं शिवजी को भी इसी देवी की असीम कृपा से सिद्धि प्राप्त हुई थी। सिंहवाहन पर विराजमान इस देवी की प्रिय वस्तु कमल का फूल है। मार्कण्डेय पुराण में बताया गया है कि इस साधना को करने से इस लोक और परलोक दोनों में मोक्ष की प्राप्ति होती है और यदि सिद्धिदात्री प्रसन्न होकर वरदान दे दें तो साधक की सभी मनोकामनाएं बिना कोई इच्छा छोड़े पूरी हो जाती हैं। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व आठ प्रकार के सिद्धियों का वर्णन किया गया है।

इस दिन को निर्माण और शिल्प कौशल के देवता विश्वकर्मा का दिन भी माना जाता है और इंजन, वाहन, कारखानों आदि में बलि चढाई जाती है। आज सबसे अधिक बलि दी जाती है। शक्तिस्वरूपा देवी द्वारा असुरों का शिकार करने और उन्हें मारने के बाद बचे हुए असुरों ने जानवरों का रूप धारण कर लिया था, इसलिए एक किंवदंती है कि जानवरों के वेश में असुरों को बलि दी जाती है।आज कलपुर्जा, हथियारों और वाहनों की विशेष पूजा के साथ-साथ जंगी निशान पूजा और कोट पूजा भी की जाती है।विशेषरूप से नेपाली समाज के मंदिरों में बकरों, बत्तखों, मुर्गियों, भेड़ों और मुर्गों की बलि के साथ-साथ पूजा और सप्तशती का पाठ किया जाता है।कुछ स्थानों पर आज के दिन मुर्गे, बकरी, भेड़, बत्तख और मुर्गे की पंचवली चढ़ाकर भी कोटपूजा और निशानपूजा की जाती है। इस दिन धूप, फूल, नैवेद्य आदि लेकर खेतों में जाकर मिट्टी और अनाज के पौधों की पूजा करने की प्रथा है।कुछ शक्तिपीठों में दो से दस वर्ष तक की कन्याओं के पूजन की भी प्रथा है और इस प्रकार कन्या पूजन के बारे में देवी भागवत में भी लिखा है।

©Indira Gandhi National Open University

जमरा (सप्तधान्य अथवा जौं का अकुरण)-

यवगोधूमधान्यानि तिलाः कङ्कुस्तथैव च।
श्यामाकं चीनकश्चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्॥[3]

(षट्त्रिंशन्मत)

(क) जौं, गेहूँ, धान, तिल, टाँगुन, साँवा तथा चना - ये सप्तधान्य कहलाते हैं।

(ख) मतान्तर से जौ, धान, तिल, कँगनी, मूँग, चना तथा साँवा - ये सप्तधान्य कहलाते हैं।

यवधान्यतिलाः कंगुः मुद्गचणकश्यामकाः।
एतानि सप्तधान्यानि सर्वकार्येषु योजयेत्॥

इस प्रकार घटस्थापना में सप्त धान्य का विशेष महत्त्व है। सप्तधान्य की अनुपलब्धता में जौं (यव) से भी विधि पूरी की जाती है। आज के परिप्रेक्ष्य में सप्तधान्य में जौं का ही अत्यधिक उपयोग किया जाता है जिससे सप्तधान्य के स्थान पर जमरा (अंकुरित जौं - जयन्ती) शब्द प्रचलित में आया। मिट्टी, पानी, हवा, फूल आदि से मिला हुआ यह संस्कार प्रकृति के साथ हमारी सामीप्यता को बोध कराता है। सनातन धर्म के महान् दसैँ (दशहरा) पर्व में जमरा (जयन्ती) संस्कृतिएक मूल विरासत के रूप में बनी हुई है। दसैँ (दशमी) दिन के लिए यह जमरा (जयन्ती) को घटस्थापना के दिन बोया जाता है।जमरा (जयन्ती) को परिवार की संख्या के अनुसार ज्यादा अथवा कम बोया जाता है। जमरा (जयन्ती) रखने की परम्परा देश, काल, परिस्थिति के अनुसार भिन्न भिन्न है। कुछ सामूहिक रूप से दसैँघर में, कुछ मठ-मन्दिर में, कुछ शक्तिपीठ में और कुछ अपने घर के पूजा कक्ष में या किसी स्वच्छ स्थल में जमरा (जयन्ती) को बोते हैं। जमरा (जयन्ती) रखते समय ऐसे स्थान का चयन किया जाता है जिसमें रोशनी अच्छी तरह से न आती हो, इसलिए बिना रोशनी के जमरा (जयन्ती) पीले होते हैं। घटस्थापना से शुरु होने वाला दसैँ (दशमी) का नवरात्र जमरा (जयन्ती) का 9 दिन का जीवन और दैनिक अंकुरण की प्रक्रिया भी है। जमरा (जयन्ती) जौं के दाने के अंदर की जीवनशक्ति को उजागर करता है और उसके मिट्टी से पोषित करता है।

सभ्यता और इतिहास की प्रक्रिया पर नजर डालें तो जौ पहला अनाज है जिसे जंगली युग की समाप्ति के बाद मानव ने व्यवस्थित रूप से उगाना

---

[3]अन्त्यकर्म श्राद्धप्रकाश, पृ.सं. २७

©Indira Gandhi National Open University

शुरू किया। बड़ी बड़ी नदियों के किनारे इस मानव सभ्यता प्रक्रिया की खुदाई और अन्वेषण के दौरान मिश्र और चीन में हजारों साल पुराने जौ के अशेष मिले हैं। विश्व भर में जौ को अति प्राचीन अनाज के रूप में विशेष महत्त्व माना जाता है।

हमारे सनातन धार्मिक अनुष्ठानों की कल्पना जौ, तुलसी, कुश और तिल के बिनापूर्ण नहीं किया जा सकता। जौ को नेवारी भाषा में **तःछो** तथा अंग्रेजी में **बार्ली (barley)** कहा जाता है। जौ का पोषण मूल्य निर्विवाद है, टीवी और रेडियो पर दिखाए जाने वाले विज्ञापनों में पौष्टिक कहे जाने वाले महंगे आयातित खाद्य पदार्थों में भी जौ की मात्रा बताई जाती है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट और विटामिन कैरोटीन होता है।

इस अंकुरित जौ (जमरा/जयन्ती) को सिर पर रख कर टीका लगाने के संस्कार से प्रत्येक नेपाली को सद्भाव, सद्गुण और समृद्धि के साथ दुर्गा भवानी की शक्ति प्राप्त हो और जैसे-जैसे बिखरा हुआ जौ (जमरा) धीरे-धीरे अंकुरित होता है, उस प्रक्रिया में सबसे पहले जड़ेंमिट्टी की ओर बढ़ने लगती हैं और जड़ें बढ़ने के बाद वे धीरे-धीरे जौ (जमरा) के पत्तों के ऊपर बढ़ने लगती है। उसी तरह, शायद प्रकृति ने हमें हमारी जड़ो, यानी संस्कृति, परम्पराओं और मानवीय नींव के बारे में जानकारी दी है। पौधे चाहे कितने भी बड़े, ऊँचे और मोटे क्यों न हों, उनकी शाखाएँ भले ही आसमान छूने की कोशिश करें, लेकिन उनकी जड़ें मिट्टी में होती हैं। यानी हम कितना भी बदल जाएं या प्रगति कर लें और आसमान छू लें, यह हमारी अनमोल संस्कृति और परम्परा की नींव को न भूलने के महत्व को दर्शाता है।

टीका -दसैँ (दशहरा) के दिन नवदुर्गा विसर्जन के पश्चात् परिवार में बड़ों बुजुर्गों से तिलक लगवाया जाता है। जिसे टीका कहते हैं। टीका लगाते समय जमरा (जयन्ती) को आशीर्वाद के रूप में दिया जाता है। पुरुष वर्ष जमरा (जयन्ती) को दायें कान में लगाते हैं तथा महिलाएँ अपने केश में लगाती हैं। टीका का निर्माण के लिए - चावल, लाल अबीर, दही अथवा केला को मिलाया जाता है।इस प्रकार से निर्मित टीका को माथे में लगाया जाता है। दसैँ (दशमी) के दिन सभी के ललाट लाल टीका से युक्त होते हैं।

पूरे परिवार को एक जगह बैठाकर घर के मुख्य स्तंभ की पूजा करने और उम्र के अनुसार बड़े और फिर छोटे को टीका, जमरा और आशीर्वाद देने की प्रथा है। बड़े उम्र के लोग साईत का टीका लगाने के लिए अपने बड़े

©Indira Gandhi National Open University

बुजुर्गों के पास जाते हैं और यदि नहीं, तो वे अपने जीवनसाथी, जीवन साथी या छोटे भाई के पास जाते हैं।घर के बड़े लोगों से टीका लगाते समय दक्षिणा देने का नियम है, वहीं मामाघर में टीका लगाते समय दक्षिणा मिलती है।

यह पवित्र त्योहार हिंदू धर्म तक ही सीमित नहीं है बल्कि एक प्राचीन त्योहार है। धार्मिक लोग भी इसे हर्ष और उल्लास के साथ मनाते हैं। अंतर केवल इतना है कि हिंदू लाल टीका लगाकर नवदुर्गा भगवती की पूजा करते हैं, जबकि बौद्धधर्म के अनुयायी सफेद टीका लगाकर प्रज्ञा की पूजा करते हैं।

वैदिक सनातन धर्मावलंबियों ने दसैँपर्व के आशीर्वाद को पौराणिक पात्रों और उनके महारथों से जोड़ा है। आज दशमी तिथि का मतलब विजयादशमी का दशवाँ दिन है और इस दिन पड़ने वाला यह शब्द दशमी और दशहरा से लिया गया है। दशहरा का अर्थ है दशानन रावण की पराजय (दशानन का अर्थ है दश = दस + आनन = मुख)। यह भी उल्लेख है कि इस दिन दुर्गा भवानी ने महिषासुर नामक असुर का वध किया था। इन टीकाओं, जमराओं और मौज-मस्ती के माहौल को राक्षसों पर देवताओं की विजय, असत्य पर सत्य की विजय और अमानवीय तत्वों पर मानवता की विजय के रूप में लिया जाता है।

टीका लगाते समय महिलाओं और पुरुषों को अलग-अलग आशीर्वाद मिलता है, जिसके मंत्रोच्चार के शब्द और अर्थ यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं। वैदिक सनातन धर्म के मंत्र नेपाली अथवा अन्य भाषाओं में उपलब्ध नहीं हैं। अनेक देवी-देवताओं की प्रार्थना करते समय संस्कृत भाषा में अनेक अर्थपूर्ण मंत्रों का उच्चारण किया जाता है। आज नेपाली समाज के घरों में लाल टीका, जमरा और इन मंत्रों का जाप किया जाता है।

दसैँपर्व में टीका लगाते समय उच्चारित किये जाने वाले आशीर्वाद मन्त्र -

आयुर्द्रोणसुते श्रियो दशरथे शत्रुक्षयो राघवे,
ऐश्वर्यं नहुषे गतिश्च पवने मानश्च दुर्योधने।
शौर्यं शान्तनवं बलं हलधरे सत्यश्च कुन्तीसुते,
विज्ञानं विदुरे भवन्तु भवतां कीर्तिश्च नारायणे॥

©Indira Gandhi National Open University

भावार्थ *- आप द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा की तरह लंबे समय तक जीवित रहें। राजा दशरथ के समान आपकी प्रतिष्ठा बढे। आप भगवान राम के समान अपने शत्रुओं का सफाया करने में सक्षम हों। आपका भौतिक कल्याण राजा नहुष के समान हो। आपकी गति वायु के समान हो। राजकुमार दुर्योधन की तरह लोग आपका सम्मान करें। आप भगवान श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम के समान बलवान बनें। आप कुंती के पुत्र (युधिष्ठिर) के समान सच्चे बने। आप विदुर के समान बुद्धिमान बनें। भगवान नारायण की तरह आपकी महिमा बढ़ती रहे।*

यावत्तोयधराधराधरधराधाराधराभूधा,
यावच्चारुसुचारुचारुचमरीचामीकृतं चामरम्।
यावद्रावणरामरामरमणं रामायणं श्रूयते,
तावद् भोगविभोगभोगविभवैस्त्वं दीर्घजीवी भव॥

आयुष्मान् भव पुत्रवान् भव सुखी श्रीमान् यशस्वी भव,
प्रज्ञावान् भव भूरिभूतिकरणे दानैकनिष्ठो भव।
तेजस्वी भव वैरिदर्पदलने व्यापारदक्षो भव
श्रीशम्भोर्भव पादपूजनरतः सर्वोपकारी भव ॥

लक्ष्मीस्ते पङ्कजाक्षी निवसतु भवने भारती कण्ठदेशे,
वर्धन्तां बन्धुवर्गाः सकलरिपुगणा यान्तु पातालमूलम्।
देशे देशे च कीर्तिः प्रसरतु भवतां दिव्यकुन्देन्दुशुभ्रा
जीव त्वं पुत्रपाऽत्रैःसकलसुखयुतैर्हायनानां शतैश्च॥

भावार्थ *-आपके घरम में कमल के समान नेत्रों वाली लक्ष्मी माँ विराजमान हों। माता सरस्वती कण्ठ में बिराजे। आप के बंधुवर्ग बढ़े। सभी शत्रु पाताल में जायें। आपकी सुनाम ख्याति पूरे देश में फैले। आप सौ वर्ष तक पुत्र-पौत्र सहित सभी सुखों के साथ रहें।*

आयुर्बलं विपुलमस्तु सुखित्वमस्तुसौभाग्यमस्तु विशदा तव कीर्तिरस्तु॥
श्रेयोऽस्तु धर्ममतिरस्तु रिपुक्षयोऽस्तु सन्तानवृद्धिरपि वाञ्छसिद्धिरस्तु॥

©Indira Gandhi National Open University

दीर्घायुर्भव जीव वत्सरशतं नश्यन्तु सर्वापदः
स्वास्थ्यं संभज मुञ्च चञ्चलधियं लक्ष्यैकनाथो भव।
किंब्रूमो भृगुगीतमात्रिकपिलव्यासादिभिर्भाषितम्
यद्रामस्य पुराऽभिषेकसमये तच्चास्तु ते मङ्गलम्॥

यावदिन्द्रादयो देवा यावच्चन्द्रदिवाकरौ।
यावद् धर्मक्रिया लोके तावद् भूयात् स्थितिस्तव॥

आयुर्वृद्धिर्यशोवृद्धिर्वृद्धिः प्रज्ञासुखश्रियाम्।
धर्मसन्तानयोर्वृद्धिः सप्त ते सन्तु वृद्धयः॥

भावार्थ *-आप दीर्घायु बने, आपका यश बढ़े, ज्ञान, सुख और धन में वृद्धि हो। धर्म और सन्तान बढ़े। आप में ये सात जीचें बढ़ें।*

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥

भावार्थ *-जयन्ती, मंगला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा, स्वधा आदि नाम वाली हे देवि आपको मेरा नमस्कार है।*

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥

ब्रह्मा करोतु दीर्घायुर्विष्णुः करोतु सम्पदः।
हरो हरतु पापानि गात्रं रक्षतु चण्डिका॥

भावार्थ *-ब्रह्मा आप को दीर्घायु प्रदान करें, विष्णु आपको सम्पदा दें, महादेव आप के सभी पापों का नाश करें, माता चंडिका आप के शरीर की रक्षा करें।*

निवसतु तव गेहे निश्चला सिन्धुपुत्री

©Indira Gandhi National Open University

प्रविशतु भुजदण्डे कालिका वैरिहन्त्री।
तव वदनसरोजे भारती भातु नित्यम्
न चलतु तव चित्तं पादपद्मान्मुरारेः॥

भावार्थ *-आपके घर में अचल लक्ष्मी का वास हो। शत्रु का नाश करने वाली कालिका आपके भुजदण्ड में प्रवेश करें। सरस्वती हमेशा आपके वाणी पर प्रकाशित हो। आपका मन भगवान विष्णु के चरण कमलों में लगा रहे।*

त्योहारों के दौरान लोगों को किस चीज़ से खुशी मिलती है, इस विषय की तलाश करते समय, यदि आप यह देखें कि मनुष्य कौन हैं, तो आपको उत्तर मिल सकता है। मनुष्य मूलतः सुख चाहने वाला प्राणी है। लोग नए-नए व्यंजन पाकर खुश होते हैं। लोग नए कपड़े पहनकर खुश होते हैं। लोग नए संगीत, वाद्ययंत्र और नृत्य से खुश हैं। मनुष्य समूह में रहना पसंद करते हैं। जब समाज में सभी लोगों को ये सभी चीजें एक साथ मिल जाती हैं तो हर तरफ खुशी का संचार हो जाता है।यह केवल त्योहारों के दौरान ही संभव है। दसैँ-तिहार जैसे नेपाली त्योहारों में संगीत का पहलू मजबूत है। न केवल नेपाली जाति में, बल्कि पूरी दुनिया में संगीत का पक्ष मजबूत है। संगीत प्राचीन काल से ही खुशी व्यक्त करने का साधन रहा है।जब लोगों ने अपनी ख़ुशी व्यक्त करनी चाही तो उन्होंने अपनी भावनाओं को गीतात्मक रूप में व्यक्त करना शुरू कर दिया। दसैँपर्व पर मालश्री धुन, तिहारपर्व पर देउसी-भैलो इसके उदाहरण हैं। दसैँ-तिहार जैसे त्योहारों में देवी-देवताओं या किसी वीर गाथा के गायन का कारण अपने वीर पूर्वजों के प्रति सम्मान होता है।

यह त्यौहार या तो किसी वीर व्यक्ति की जीत का जश्न मनाने के लिए या किसी उद्धारकर्ता के आगमन का जश्न मनाने के लिए, स्वागत करने के लिए मनाया जाता है। ऐसे उत्सवों को रंगीन बनाने के लिए लोग रंगों, संगीत, नृत्य और गीतों का सहारा लेते हैं और पर्व में संगीत का पक्ष प्रबल होता है।

अब हमारे त्योहार का स्वरूप बदल रहा है। हमारा समाज त्योहारों से भी ज्यादा बदल रहा है। जिस गति से समाज बदल रहा है,सांस्कृतिक परिवर्तन की गति बहुत धीमी है। अगर समय के साथ कोई चीज नहीं बदलेगी, अगर वह फैलेगी नहीं, अगर उसे व्यापक समाज स्वीकार नहीं करेगा तो त्योहार कमजोर पड़ जाएगा।वह उत्सव बन कर नहीं रह जाता, वह आनंद बन कर नहीं रह जाता। हमें अपनी संस्कृति की खिड़कियाँ और दरवाजे

©Indira Gandhi National Open University

खुले रखने चाहिए।यह सभी के लिए सुलभ होना चाहिए। नई पीढ़ी ने जिस तरह के त्योहार को स्वीकार किया है, उसका प्रसार जारी है। समय के साथ त्योहारों में बदलाव होना चाहिए।आज, नेपाली गीत शहर में लोकप्रिय है क्योंकि यह समय के साथ बदल गया है। धान रोपने, धान लाने या ऐसे किसी अनाज का स्वागत करते समय हम अपने लोकगीत गाते थे, अब अगर हम शहर में वही माहौल खोजने की कोशिश करेंगे तो वह खत्म हो जाएगा।आज छठ, धान नृत्य, देउड़ा नृत्य खुले मंच पर नाचता हुआ पाया जा सकता है। बाजार के चौराहों पर लोकदोहोरी रेस्तरां खुल गए हैं। लेकिन उननृत्यों का पुराना स्वरूप वहाँ नहीं है। लोक संस्कृति नये वातावरण का निर्माण कर अपने स्वाद को कायम रखती है। आज नेपाली फिल्मों के लोकगीतों का प्रयोग विभिन्न जातियों की भाषा शैलियों में किया जाता है। ऐसा किए बिना सीन में गहरा स्वाद नहीं आता है।लोक फ्लेवर आधारित गीत भी लोकप्रिय होते हैं। इसका मतलब है कि हमें लोकवार्ता पसंद है। इसे समय-समय पर बदलते रहना चाहिए। देउसी-भैलो लोकगीतों में पहले मदल (वाद्ययन्त्र) का ताल बजता था, आज गिटार बजने लगा है, यह स्वाभाविक है।

आज के युग में जिस तेजी से दुनिया के सभी त्योहारों का प्रवेश हो रहा है, वह हमारी संस्कृति के लिए खतरा बनता नजर आ रहा है। इंटरनेट या संचार के अन्य साधनों के कारण, यह स्वाभाविक है कि बाहरी त्योहारों को प्राथमिकता दी जाए। ये खतरे की बात नहीं है।दूसरे लोगों के त्योहारों को स्वीकार करने का मतलब है कि उनमें कुछ ऐसा है जो हमारे दिल को छू जाता है। इसलिए हमने इसे स्वीकार कर लिया है। उन त्योहारों ने समय के साथ खुद को बदल लिया। यही मौसमी बदलाव हम अपने त्योहारों में भी कर सकते हैं। हमारे त्योहार में इंसानों की भी पूजा होती है, पशु-पक्षियों की भी पूजा होती है।यह हमारी गजब की संस्कृति है। आज इसकी विशिष्टता को हर कोई स्वीकार करता है। हमें इन त्योहारों को भी इसी तरह से आकर्षक बनाना चाहिए।अगर बड़ी हस्तियां, लेखक, संगीतकार और सभी पार्टियां इसके पक्ष में काम करें तो हमारे त्योहार भी वैश्विक हो जाएंगे।

इसलिए किसी भी जाति को अपनी लोक संस्कृति को कभी नहीं भूलना चाहिए। हालाँकि, संस्कृति बदलती रहती है। ऐसी रचनाएँ तभी सफल होती हैं जब वे बदलाव की गति के अनुरूप लिखी जाएँ, नई पीढ़ी को पसंद

©Indira Gandhi National Open University

आएँ। पाठक के हृदय को पकड़कर, उसे समय, काल और परिस्थिति में ढालकर लिखा जाए तो लोक संस्कृति मानव हृदय की वीणा बजाती है।

सन्दर्भसूची

१. घटस्थापना व्रत– https://shorturl.at/gmnD3
२. फूलपाती - https://shorturl.ac/phulpati
३. महाअष्टमी - https://shorturl.ac/mahaashtami
४. महानवमी - https://shorturl.ac/maha_navami
५. विजयादशमी –https://shorturl.ac/vijaya_dashami
६. आशीर्वादामन्त्राः - https://shorturl.at/wGLVW
७. नेपालको संस्कृति - https://ne.wikipedia.org/wiki/नेपालको_संस्कृति
८. गढ़ संवेदना –https://shorturl.at/aFIQY
९. गोरखा - https://shorturl.at/ulVWY
१०. विजयादशमी - https://ne.wikipedia.org/wiki/विजयादशमी
११. नेपाली संस्कृति - https://hi.wikipedia.org/wiki/नेपाली_संस्कृति
१२. लोकवार्ता र नेपाली लोक साहित्य - https://shorturl.ac/nepali_lok_sahitya
१३. मालश्री धुनको गाथा - https://www.bbc.com/nepali/news-41438674
१४. दशैँ टिका आशीर्वाद मन्त्र- https://shorturl.ac/ashirvad_mantra
१५. पूर्वोत्तर भारत - https://en.wikipedia.org/wiki/Northeast_India
१६. दुर्गा सप्तशती - https://shorturl.ac/durga_saptashati
१७. अन्त्यकर्म श्राद्धप्रकाश - https://shorturl.ac/antyakarma_shraddha_prakash

©Indira Gandhi National Open University